जेको दुखाए, संतनि सापुरिसनि खे,
सो कीतो पंहिंजो पाणहीं, जन्मनि मंझि पाए,
जिएं कीड़ो गंद में, नितु दुब्री खाए,
साधू छड्राए, त सामी छुटे दुख खां.

सामी साहब एक तथ्य की ओर संकेत करते हुए कहते हैं कि किसी भी संत, महात्मा या सत्पुरुष को सताना, दुख देना बड़ा पाप है। जो मनुष्य किसी संत को सताएगा, दु:ख देगा, उसे इसी जन्म में उसका फल/परिणाम भुगतना पड़ेगा। न केवल इस जन्म में अपितु अनेक जन्मों में वह दु:ख भोगता रहेगा। उसे अपनी करनी का फल मिलेगा और एक कीड़े की तरह उसे गंदगी (विष्ठा) में सदा डूबते रहना पड़ेगा। उस पापी जीव को तभी मुक्ति मिलेगी, जब कोई साधु संत आ कर उस पर दया कर छुड़ाएगा।

सच्चे संत मानो चलते-फिरते भगवान होते हैं। संत अपने आदर्शमय जीवन और कृति द्वारा स्वार्थ व संघर्षमय जीवन सुधारने में सहायता करते हैं। आत्मज्ञानी संत जीवन का रहस्य जानते हैं। वे समाज का हित साधने का महत् कार्य करते रहते हैं। आनंद के भंडार माने जाने वाले संत मनुष्य को भवसागर तैरने का, मोक्ष-मुक्ति प्राप्त करने का मार्ग बताने वाले होते हैं। नाम-स्मरण का आसान मार्ग संत ही बताते हैं, जिससे सामान्य मनुष्य भी परमेश्वर की भक्ति कर अपना जीवन सार्थक कर सकता है। ऐसे सच्चे संतों का आश्रय ग्रहण करना सबके लिए श्रेयस्कर है।

किन्तु समाज में कुछ ऐसे अधम, पापी और पतित लोग भी होते हैं, जो अहंकार के कारण सच्चे संतों की सेवा करने की अपेक्षा संतों की निंदा करते रहते हैं, संतों को सताते रहते हैं और दु:ख देते रहते हैं। सामी साहब के विचारानुसार ऐसे लोग महापापी होते हैं। वस्तुत: संतों को बिना किसी विशेष कारण के दुखाना उचित नहीं है। संतों को अगर कुछ देना नहीं है, तो उन्हें दुखाना भी नहीं चाहिए। ईश्वर-स्वरूप संतों को सताने का अर्थ है परमेश्वर को दु:ख पहुँचाना।इसका फल/नतीजा ऐसे निर्दयी लोगों को इस जन्म में तो भुगतना ही पड़ेगा, अपितु जन्म-जन्मांतर में भी अनेक यातनाएँ सहनी पड़ेंगी। उन्हें उन दु:खों और यातनाओं से कोई दयालु साधु ही मुक्ति दिला सकता है।

संत न छांडै संतता, कोटिक मिलै असंत।
मल भुजंग भेदिया, शीतलता न तंजत।।

■